हिन्दी साहित्य को प्रवासी साहित्यकारों का योगदान

डॉ. अमृता सिंह

सारांश -

प्रवास की प्रक्रिया में आई निरन्तरता, भूमंडलीकरण, कंप्यूटर-इंटरनेट क्रांति के साथ-साथ विश्वभर में प्रवास कर रहे हिन्दी रचनाकारों का विभिन्न माध्यमों द्वारा साहित्य के प्रति लगाव व जुड़ाव ने हिन्दी साहित्य को बड़े प्रभावशाली ढंग से विश्वभर में पहचान दिलवाई है। विदेश में रहने वाले रचनाकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा दो संस्कृतियों की टकराहट, भारतीयता तथा पाश्चात्यता के मध्य झूलते प्रवासियों की मानसिकता, पुनः अपने देश लौट आने की तड़प और ललक, प्रवासी जीवन के अनुभवों आदि का गहनता से वर्णन किया है। प्रवासी साहित्य का अपना एक वैशिष्ट्य है जो इन साहित्यकारों की रचनाओं की संवेदनाओं, परिवेश, जीवन दृष्टि में दृष्टिगत है।

बीज शब्द – प्रवासी साहित्यकार, दो संस्कृतियों की टकराहट, भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति, अप्रवासियों की विडम्बना, संवेदना, हिन्दी साहित्य।

मूल प्रतिपादन-

राष्ट्रीय परिधि से बाहर निकलकर वैश्विक स्वरुप धारण कर चुकी हिन्दी भाषा के वैश्विक विस्तार और साहित्यिक परिणाम में निरंतर वृद्धि होती जा रही है, जिसका एकमात्र कारण है भारतीय संस्कृति। लोक कथाओं, लोक गीतों, विभिन्न सभ्यताओं के बावजूद अनेकता में एकता के कारण भारत की संस्कृति ने निरंतर विदेशों में अपनी एक अलग व विशिष्ट छवि बनाई है। हिन्दी की इस विशिष्टता का ही परिणाम है कि आज यह भाषा विश्व के लगभग 121 देशों में बोली और समझी जाती है। आंकड़ों के अनुसार विश्व स्तर पर हिन्दी प्रेमियों की संख्या 1103 मिलियन है। भारत के पड़ोसी देश – पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, अफ़ग़ानिस्तान, बर्मा, बांग्लादेश, श्रीलंका के अतिरिक्त अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका तथा एशिया महाद्वीप जैसे देशों में बसे भारतीय तथा वहाँ के मूल निवासी भारतीय संस्कृति, विद्या तथा भाषा में रुचि रखते हैं तो वहीं फीजी, मॉरिशस, सूरीनाम, ट्रिनिडाड, उज़्बेकिस्तान, तजाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, फ्रांस, थाईलैंड, जापान, कनाडा, क्यूबा आदि जैसे देशों में हिन्दी में होने वाले प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च शिक्षण ने हिन्दी को विश्व में सम्मानजनक स्थान दिलाया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व भर में लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन किया जा रहा है।

सौ-डेढ़-सौ वर्ष पूर्व गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में फीजी, मॉरिशस, सूरीनाम, ट्रिनिडाड में आ बसे प्रवासी भारतीयों के कारण जहाँ हिन्दी पहले से प्रतिष्ठित थी, वहीं प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाज़, परम्पराओं और भाषा को विश्व स्तर पर एक अलग पहचान दिलवाई है। इस सन्दर्भ में असगर वजाहत प्रवासी महाविशेषांक के सम्पादकीय में लिखते हैं – "बीसवीं शताब्दी में भारतीय मूल के लोगों ने एक देश में नहीं बल्कि लगभग संसार के हर कोने में जिस अस्मिता को जगाया है और जो पहचान स्थापित की है, वह इससे पहले संभव न थी। आज का प्रवासी भारतीय पहले के प्रवासी से भिन्न है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि प्रवास के इस युग में तकनीक और विज्ञान ने दूरियों के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के रास्ते को प्रशस्त भी किया है।"[1] साहित्य के माध्यम से ही प्रवासी साहित्यकार अपनी जड़ों जो कि मातृभूमि, संस्कारों और भाषा से जुड़ी हुई हैं को खोजने और उनके निकट पहुँचने का प्रयास करते हैं। विदेशी संस्कृति में निवास करने के पश्चात् भी भारतीयता ही उनके मन-मस्तिष्क में रची-बसी है | अनीता कपूर के अनुसार "प्रवासी कथा साहित्यकारों में ऐसे बहुत से नाम हैं, जिनकी रचनाओं को पढ़कर आप बखूबी अनुमान लगा लेंगे कि आज भी विदेशों में रहते हुए वे दुनिया को भारतीय चश्मे से देखते हैं, इसलिए उनका लेखन नयेपन के बावजूद पाठक के दिल के करीब होता है और मन को छू जाता है।"[2]

जहाँ प्रवासी भारतीयों का हिन्दी के प्रति गहरा अनुराग और अपनी जड़ों से जुड़े रहने की ललक ने हिन्दी को विकसित किया है, वहीं विश्व हिन्दी सम्मेलनों तथा प्रवासी साहित्य सम्मेलनों के आयोजन, विदेशों में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, डायस्पोरा, भारतीय राजदूतों द्वारा हिन्दी-लेखन को प्रोत्साहित करना आदि की भी हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रवासी लेखन के विषय में सुषम बेदी का कथन है – "प्रवासी लेखन ने विश्व को एक सूत्र में जोड़ने का काम किया है।"[3] मॉरिशस के बाद अमेरिका और इंग्लैंड में प्रवासी साहित्य की रचना सबसे अधिक हुई है। सुषम बेदी, सुधा ओम ढींगरा, गुलाब खंडेलवाल, वेद प्रकाश 'बटुक', विजय मेहता, अंजना संधीर, उषा राजे सक्सेना, दिव्या माथुर, अर्चना पेन्यूली, कविता वाचकनवी,गौतम सचदेव, अभिमन्यु अनत, मोहन राणा, तेजेंद्र शर्मा आदि प्रतिष्ठित और सम्मानित लेखक हैं।

पद्मानंद साहित्य सम्मान तथा मैथिलीशरण गुप्त प्रवासी लेखन सम्मान से सम्मानित, ब्रिटेन में रहने वाली **दिव्या माथुर** प्रवासी हिन्दी लेखकों में एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनकी रचनाओं में देश-विदेश के परिवेश, प्रवासी जीवन की विडंबनाएं, आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक संरचना के कारण विदेशी प्रवृति के प्रति टूटते मोह का चित्रण सशक्त ढंग से किया गया है। उनकी अधिकतर कहानियाँ में बाज़ारवाद के अधीन हो गुलाम बनती जा रही जनता, झूठी प्रतिष्ठा को बनाए रखने की होड़ में आधुनिक परिवेश का अंधानुकरण, प्रजाति भेदभाव, परम्पराओं और आधुनिक परिवेश में अंतर, प्रेम व काम के मध्य का अंतर, मांसल प्रेम, पति

व सास द्वारा पीड़ित नारी जैसे मुद्दों को उभरा गया है। दिव्या जी ने अपनी संस्कृति, परम्पराओं तथा सभ्यता से दूर विदेशों में रह रहे लोगों के मन की पीड़ा और व्याकुलता को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रकट किया है।

अमेरिका की प्रीसिद्ध लेखिका **सुषम बेदी** ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रवासी भारतीयों की मानसिकता, सांस्कृतिक और पीढ़ीगत अन्तराल के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाजों को दर्शाया है। वे एक ओर जहाँ अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत नारी का वर्णन करती हैं वहीं दूसरी ओर उन्होंने कनाडा जैसे विकासशील देश में पुरुष का वेश्या बनकर सरल व सहज जीवन व्यतीत करने का ढंग खोजते एक पात्र को भी चित्रित किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने दो संस्कृतियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में आई कठिनाइयों और उस द्वन्द्ध में पिस रहे व्यक्ति, संबंधों के प्रति मोहभंग, उन्मुक्त यौन सम्बन्ध, विस्थापन की पीड़ा जैसी समस्याओं को भी परत दर परत खोला है।

त्यौहार भारतीय संस्कृति की एक ऐसी धरोहर है जिसने विश्व भर में भारत को एक अलग पहचान दी है। इस पहचान को विदेशों में रहने वाले लोगों ने भी बरकरार रखा है। वैसे तो विदेशों में भारतीय त्यौहारों पर छुट्टी नहीं दी जाती, फिर भी वीकेंड्स (weekends) पर प्रवासी भारतीय मिल-जुलकर, उत्साहपूर्वक सभी त्यौहारों को कम्युनिटी हॉल, मंदिरों या खेल के मैदानों में मनाते हैं। सुषम बेदी ने भी अपने उपन्यासों के माध्यम से यह दर्शाया है कि किस प्रकार विदेशों में रह रहे लोग त्यौहारों को मंदिरों में मनाते हैं।

मॉरिशस के हिन्दी कथा-साहित्य के सम्राट या मॉरिशस का प्रेमचंद कहलाए जाने वाले **अभिमन्यु अनत** ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार "जिसमें समाज की आवाज़ सुनाई दे, वही सार्थक रचना है। आदर्श आवश्यक है, लेकिन रचनाकार को यथार्थ को भी पूरा महत्व देना चाहिए।"[4] उनकी कथाओं में मॉरिशस की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विसंगतियों के साथ-साथ इस तथ्य को भी उजागर किया गया है कि किस प्रकार सामाजिक दरिद्रता, भ्रष्टाचार, भूख से तड़प रहे आम आदमी की समस्याओं और कठिनाइयों की ओर ध्यान न देते हुए मॉरिशस की स्वतंत्रता की वर्षगांठ पर हज़ारों रुपए खर्च किए जाते हैं। जहाँ अनत जी ने मज़दूरों पर गोरों द्वारा किए गए शोषण, नारी जीवन की विसंगतियों, अंतर्जातीय विवाह की समस्या, पथभ्रष्ट होते जा रहे युवावर्ग आदि को चित्रित किया है वहीं भाई-भतीजावाद तथा पौराणिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन पर व्यंग्य भी किया है। अतः यह कहना असंगत न होगा कि अभिमन्यु अनत ने समाज में हो रहे मानवता के पतन को, मानव जीवन की विसंगतियों को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है बल्कि अपनी समृद्ध रचनाओं को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान भी दिलवाई है।

भारतीय मूल के ब्रिटिश हिन्दी लेखक **तेजेंद्र शर्मा**, हिन्दी साहित्य के एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय सम्मान 'इंदु शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान' प्रदान करनेवाली संस्था 'कथा यू.के' के सचिव व 'इंदु शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट' के संस्थापक हैं। हिन्दी साहित्य और लेखन की सेवा व इसे एक सम्मानजनक पद प्रदान करने हेतु ब्रिटन की महारानी 'एलिज़ाबेथ सेकंड' ने 'मेम्बर ऑफ़ द आर्डर ऑफ़ द ब्रिटिश एम्पायर सम्मान के लिए इनके नाम की घोषणा की। सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों से जुड़े रहने वाले तेजेंद्र शर्मा ने अपनी रचनाओं द्वारा ब्रिटेन के जीवन को दर्शाया है। उनकी रचनाओं में भारतीय तथा विदेशी परिवेश, विचार, अधिक पानी की दौड़ और होड़ में परिवर्तित होते जीवन मूल्य तथा प्राथमिकताएँ, विदेशों में बसे भारतीयों का विदेशी परिवेश में ढलने के संघर्ष के साथ-साथ पूर्ण रूप से न तो परंपरावादी और न ही आधुनिकता को अपना पाने की कशमकश, पैसे की चकाचौंध में खोखले होते जा रहे रिश्ते, मानव के मन-मस्तिष्क पर हावी होते जा रहे बाज़ारवाद को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दर्शाया है।

भारतीयता और हिन्दी भाषा को विदेशों में सुरक्षित रखने वाले साहित्यकारों में वेस्ट इंडीज़ में भारत के उच्चायुक्त के रूप में कार्यरत रह चुके **हरिशंकर आदेश** का नाम प्रमुख है। त्रिनिदाद और टोबैगो सरकार का 'हमिंग बर्ड स्वर्ण पदक' पुरस्कार और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के पदमभूषण डॉ.मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार से अलंकृत लेखक हरिशंकर आदेश ने वेस्ट इंडीज़ में 'भारतीय आभिजात्य संगीत' के पाठ्यक्रम का आरम्भ तथा 'भारतीय विद्या संस्थान' की स्थापना की। जहाँ साहित्य के माध्यम से आपने जीवन व नीति मूल्य, मानवीय संवेदना, संगीत, हिन्दी के प्रति प्रेम, दर्शन आदि का प्रचार-प्रसार कर भारतीय संस्कृति और परिवेश को सुरक्षा प्रदान की है; वहीं संगीत तथा भारतीय विद्या संस्थान द्वारा हिन्दी पाठ्यक्रम तैयार कर हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अपनी रचनाओं के माध्यम से आपने नैतिकता, मानवी संस्कार, मानवाधिकार, जीवन मूल्य, स्त्री के प्रति उदात्त दृष्टि आदि को उभारा है।

इंडियन कल्चरल सोसाइटी डेनमार्क की ओर से प्राइड ऑफ इंडिया (Pride of India) पुरस्कार से सम्मानित लेखिका **अर्चना पेन्यूली** ने कई कहानियाँ, उपन्यास, कविताएँ, लेख आदि हिन्दी साहित्य को प्रदान किए हैं। उन्होंने अप्रवासियों की सबसे बड़ी समस्या – 'पहचान' अर्थात आइडेंटिटी (identity) के संकट के साथ-साथ उनकी वेदनाओं, उपलब्धियों, भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति तथा परिवर्तित होते मूल्यों को उभारा है। इसके अतिरिक्त नारी सशक्तिकरण, लोगों को डेनमार्क में असंवैधानिक ढंग से व्यवस्थित करना, नारी शोषण, देश वापसी की ललक आदि का चित्रण कर दो संस्कृतियों के अलग-अलग पक्षों को उजागर किया है।

इंडिया आर्ट्स ग्रुप की स्थापना व हिन्दी नाटकों की मंचीयता द्वारा हिन्दी भाषा को प्रोत्साहित करने और इस भाषा की गरिमा को बढ़ाने में अमरीका की **सुधा ओम ढींगरा** का भी महत्वपूर्ण योगदान है। आपने अवैध प्रवास, होमलेस, प्रवासी भारतीयों की समस्याओं, नोस्टाल्जिया, वेश्यावृति, ड्रग्स पैडलर्स, भारत की स्मृति तथा अमेरिका में अपनी पहचान बनाने वाली संघर्षरत पीढ़ी के साथ-साथ अमरीकी संस्कृति और व्यवस्था में व्यस्त, मस्त और त्रस्त पीढ़ी का भी सशक्त चित्रण किया है।

भारत और अमरीका में साहित्य सृजन के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाने वाली लेखिका **डॉ. अंजना संधीर** ने एक दशक तक ब्रिस्टन विश्वविद्यालय न्यू जर्सी, कोलंबिया विश्वविद्याल न्यू योर्क, तथा स्टोनी यूनिवर्सिटी में अध्यापन किया। आपने भारतीय तथा वैश्विक परंपराओं और सांस्कृतिक मेल-मिलाप के नए संबंध स्थापित किए। अमरीका में रचित हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार करना उनका उद्देश्य रहा है। स्त्री संघर्ष, नारी शक्ति और दृढ़ मनोबल, दो संस्कृतियों के संघर्ष, भोगे हुए यथार्थ और सच को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अपने समय को संबोधित करते हुए अंजना जी ने 'प्रवासी हस्ताक्षर' (22 अमरीकन हिन्दी रचनाकारों की कविताएँ) का संपादन किया, 'ये कश्मीर है' (23 अमरीकन हिन्दी रचनाकारों की कश्मीर पर रची गई कविताएँ), 'सात समुन्दर पार' (अमरीकन हिन्दी कवि-कवयित्रियों की कविताओं का संग्रह है), 'प्रवासिनी के हस्ताक्षर' (अमरीका में दूरदर्शन और आकाशवाणी से जुड़ी तथा वहाँ के विभिन्न राज्यों में रहने वाली 81 महिलाओं की कविताओं का संग्रह) तथा 'प्रवासी आवाज़' (अमरीकी परिवेश से संबंधित कथाएँ) जैसे संग्रह निकाले।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रथम प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान से अलंकृत तथा हिन्दी के उत्थान हेतु किए कार्यों के लिए सन 2012 में जोहानिसबर्ग में सम्मानित **वेद प्रकाश 'बटुक'** ने अमरीका में रहकर हिन्दी साहित्य को स्थापित करने में विशेष योगदान दिया। आपने भाषा और लोक-साहित्य पर कई पुस्तकों का लेखन तथा सम्पादन किया। प्रतिष्ठित कथाकार **उषा राजे सक्सेना** की रचनाओं में ब्रिटेन में बसे भारतीयों तथा पाकिस्तान के अप्रवासियों की विडम्बना, उनका अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष, बदलती मानसिकता और मूल्य, महत्वाकांक्षी प्रवासी, अपनी संस्कृति और सभ्यता से लगाव एवं उनसे विमुख होते प्रवासियों, को दर्शाया है। ब्रिटेन में बसे भारतीय मूल के हिन्दी कवि **मोहन राणा** ने अपनी कविताओं के माध्यम से बड़ी पारदर्शिता के साथ दो संस्कृतियों के मध्य की विडम्बना, द्वंद्व, अव्यवस्था को प्रस्तुत करती हैं। आपकी कविताएँ स्थितियों-परिस्थितियों पर तात्कालिक प्रतिक्रिया मात्र न हो अक्सर स्मृति तथा समय से संबंधित हैं। गहन, मननशील रचनाएँ पाठक वर्ग को सहज ही छू जाती हैं।

आज हिन्दी साहित्य की रचना न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रचुर मात्रा में हो रही है। दो संस्कृतियों तथा समाज की परम्पराओं, समस्याओं, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की टकराहट को प्रस्तुत करना प्रवासी साहित्यकारों के लेखन की विशिष्टता है। इन साहित्यकारों ने अपने समाज तथा समय की विडम्बना के सत्य को अपने लेखन द्वारा अभिव्यक्त किया है। इन्होंने पश्चिमी समाज की विसंगति, सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकार, दो विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के मध्य पिस रहे व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक चित्रण, प्रवासी भारतीय की प्रतिपल परिवर्तित होती जा रही मानसिकता आदि विषयों को सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया है। लम्बे समय से विदेशों में रहने के पश्चात् भी प्रवासी कथाकारों का मन पूर्णता भारतीय ही है, जिसके चलते उनकी रचनाओं में पुनः अपने देश लौट आने की तड़प और ललक स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में हिन्दी यदि विश्व की सवार्धिक बोली जाने वाली पाँच भाषाओं में से एक भाषा है, तो इसका श्रेय प्रवासी साहित्यकारों को भी जाता है।

सहायक सन्दर्भ सूची :

1. शर्मा, सुषमा (संपादक). हिन्दी प्रवासी साहित्य से अपेक्षाएँ, www.garbhanal.com/hindee-paravaasee-saahity-se-apekshaen
2. नियाज़ी, दीबा. प्रवासी साहित्य में समाज का द्वन्द्ध, शोध_प्रवासी साहित्य में समाज का द्वन्द्ध- दीबा 'नियाज़ी'_दुनिया इन दिनों 15 से 31 दिसम्बर, 2017 https:// duniyaindinon.blogspot.com/2017/12/blog-post-17
3. शर्मा, सुशील. प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन, www.rachnakar.org/2018/03/blog-post_6html
4. गुप्ता, नीतिका. मॉरिशसीय समाज और अभिमन्यु अनत, अनहद कृति साहित्य की अनवरत बहती लहर, मार्च 2017 www.anhadkriti.com>nitika-gupta,
5. संधु, (डॉ.) मधु. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन, नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2013
6. मुखर्जी, (डॉ.) रानू. एक उद्देश्यपूर्ण जीवन लेखन – डॉ. अंजना संधीर से डॉ. रानू मुखर्जी की बातचीत, रचनाकार, www.rachnakar.org

अमृता सिंह
हिंदी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर